स्वयंभू श्री चरण की महिमा

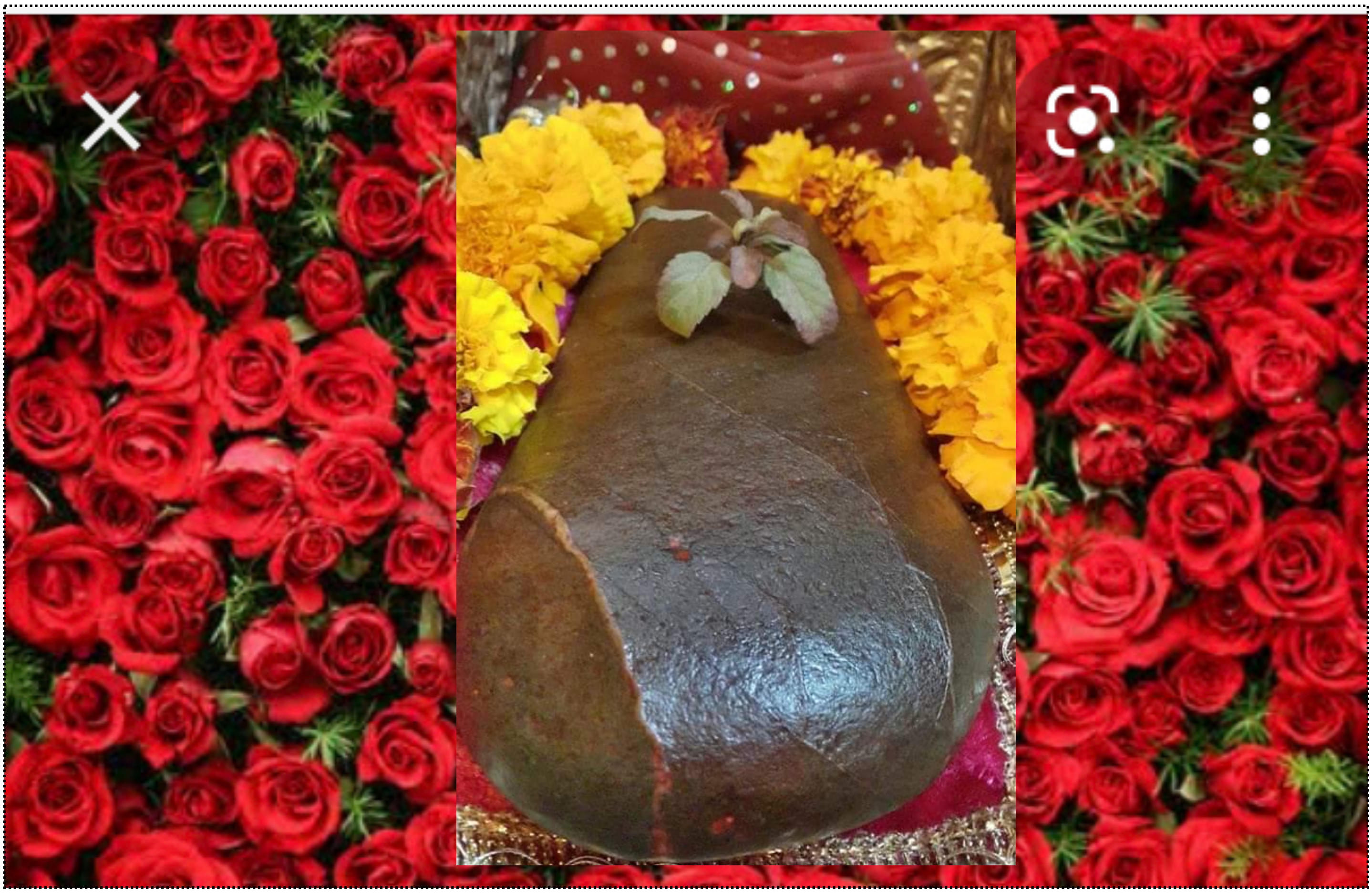

श्री चरण दर्शन

I

वंदना

गजाननं भूतगणादि सेवितं ।
कपित्थ जम्बूफलसार भक्षितम् ॥
उमासुतं शोक विनाशकारणं ।
नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ॐ नमो विश्वस्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

भूमिका

मैंने अपने जन्म से अब तक असीमित अपराध किए हैं। कभी भी बिना स्वार्थ के भगवान की पूजा भी नहीं की है। मेरे समान कोई और गिरा हुआ इंसान नहीं है।

मेरे पास महान वैष्णवों के श्लोक/ वचनों को समझने की क्षमता भी नहीं है। गुरु के आशीर्वाद के बिना श्री चरण की महिमा के बारे में लिखना तो मेरे लिए बहुत बहुत दूर की बात है।

मेरी इच्छा है कि वैष्णवों के वचनों, शास्त्रों के कथनों और गुरु के शब्दों से अपने हृदय को शुद्ध करूँ। भक्तों के साथ निरंतर संगति करने से व्यक्ति की भक्ति सेवा की साधना शुद्ध होती है और वह अविद्या पर विजय प्राप्त कर सकता है।

इस लेख को लिखना स्वयं को शुद्ध करने की ओर ही एक कदम है।

इस लेख को लिखने के लिए मेरी कोई योग्यता नहीं है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए, आचार्यों, महान वैष्णवों के शब्दों को दोहराने और श्रीकृष्ण के चरण कमलों की शरण लेने के लिए, अपने आप को शुद्ध करने के लिए ही मेरे गुरुदेव ने मुझ पर करुणा करके इस लेख को लिखने की अनुमति दी है। गुरुदेव की अनुमति से मैंने केवल शुद्ध भक्तों और शास्त्रों के वचनों को दोहराया है।

मैं अपने गुरुदेव के चरण कमलों को कोटि कोटि नमन करती हूँ।

स्वयंभू श्री चरण की महिमा

अथापि ते देव पदाम्बुजद्वय
प्रसादलेशानुगृहीत एव हि ।
जानाति तत्त्वं भगवन् महिम्नो
न चान्य एकोऽपि चिरं विचिन्वन् ॥

हे प्रभु, यदि किसी पर आपके चरण कमलों की थोड़ी सी भी कृपा हो जाए, तो वह आपके व्यक्तित्व की महानता को समझ सकता है। लेकिन जो लोग भगवान के परम व्यक्तित्व को समझने का अनुमान लगाते हैं, वे आपको नहीं जान सकते, भले ही वे कई वर्षों तक वेदों का अध्ययन करते रहें।

इस श्लोक में कहा गया है कि अगर ईश्वर के चरणों की थोड़ी सी भी कृपा मिल जाए तो यह लाभ है, भला सोचो अगर ईश्वर की कृपा से नित्य सेवा के लिए ईश्वर के चरण ही मिल जायें तो कैसी अद्भुत कृपा होगी।

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् |
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रम्हसनातनम् |

◦ कितने भाग्यशाली हैं वे लोग जो प्रतिदिन परमानंद में प्रेमाश्रुओं से श्रीकृष्ण के चरण कमलों को स्नान कराते हैं।

◦ जिनको प्रतिदिन भगवान के पैरों की पायल की मधुर झंकार सुनने का आशीर्वाद प्राप्त है।

◦ जिनको दिन-रात उन्हीं चरण कमलों की प्रेममयी सेवा के अलावा और किसी वस्तु की लालसा नहीं है।

◦ ऐसे चरण युगलों में रहने वाले परम हँसो का क्या कहना, जो सदा वर दायक दिव्य रूप की झांकी करते रहते हैं।

◦ कितने बड़े सौभाग्यशाली हैं , गुरु महाराज, गुरु माता जी और निकुंजधाम के अन्य सभी निवासी!

उनके सौभाग्य की कोई सीमा नहीं है, क्योंकि परम सत्य, दिव्य आनंद का स्रोत, शाश्वत सर्वोच्च भगवान, उनके निवास स्थान पर विराजमान हैं।

ऐसे चंद्रमाँ के प्रकाश, मेघ वर्ण श्याम, सर्व दिव्य सुखों का भंडार निकुंज धाम में स्वयं विराजमान हैं।

मैं सुखों के सागर श्रीकृष्ण के चरण कमलों और गुरुदेव के चरण कमलों में कोटि कोटि नमन करती हूँ ।

श्री भ्क्तमाल में नाभा जी ने हरी वल्लभ भक्तों का वर्णन किया है। नाभा जी लिखते हैं, “हरी वल्लभ भक्त संसार में दुर्लभ हैं जिनको अपनी नर लीला में श्री हरी ने साक्षात दर्शन दिए। ऐसे हरी वल्लभ भक्तों की चरण धूलि को प्राप्त करने की इच्छा दिल में रखी है। मेरी बुद्धि को तो भगवान के इन भक्तों की प्रेम निष्ठा तथा भजन रीति ने आकृष्ट कर लिया है।”

उससे भी ऊपर, वह परम सोभाग्यशाली भक्त हैं, जिनके यहाँ श्री कृष्ण अपने सजीव स्वरूप से सदा के लिए विराजमान हो गए।

ऐसे महापुरुष तो वृंदावन में अनेकों हैं जिनमें श्री रूप गोस्वामी जी हैं, श्री जीव गोस्वामी जी हैं, श्री सनातन गोस्वामी जी है, श्री रघुनाथ दास गोस्वामी जी हैं , श्री कुंभन

दास जी हैं, श्री चतुर्भुज दास जी हैं, श्री हरीदास जी हैं, श्री गोपाल भट्ट जी हैं और भी जाने कितने महापुरुष हैं। वृंदावन भरा पड़ा है ऐसे महापुरुषों से।

धन वृन्दावन धाम है, **धन वृन्दावन नाम। धन वृन्दावन रसिक जो**, **सुमिरै स्यामा स्याम।**"

श्री राधा कृष्ण का रमणीय स्थान, श्री वृंदावन अवर्णनीय है। यह स्वयं प्रकट है और परमानंद प्रेम वहाँ सदा मौजूद है। यह वृद्धावस्था और मृत्यु के दुखों से रहित है। जो ऐसी महिमामय स्थान पर जन्मे या जिन्होंने यहाँ रह के भजन किया ऐसे श्रेष्ठ भक्तों के चरण कमलों में विनम्र नमन करती हूँ।

उपरोक्त हरी वल्लभ भक्तों के पथ का अनुसरण करते हुए, श्री वृंदावन धाम के परम पूज्य संतो द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए, अपनी वाणी माधुर्य द्वारा जन जन को भागवत अमृत रस पान कराने वाले, श्री कृष्ण की दिव्य लीला का साक्षात्कार कराने वाले एक परम पूज्य भक्त भी हैं जिन्हें कलियुग के इस आधुनिक युग में श्री कृष्ण के चरणों का दिव्य स्नेह प्राप्त हुआ है।

प्रभु की कृपा एवं प्रभु की वाणी के ऐसे ही सार्थक पर्यायवाची हैं संत प्रवर , गुरुदेव श्री हरीनाम दास चंद्रसागर जी । श्री राधारमण का स्वरूप जिनके हृदय के अंतरतम कक्षों में अलौकिक रूप से स्थित है।श्रीकृष्ण के चरण कमलों की भक्तिमयी सेवा का सघन उत्कर्ष ही उनके जीवन की वास्तविक लालसा है।

संत आनंद और कल्याण का प्रतीक हैं , जो जगत में चलता-फिरता तीर्थराज (प्रयाग) है। जहां राम कृष्ण भक्ति की गंगाजी की धारा बहती है और सरस्वती जी ब्रह्मविचार के रूप में प्रचारित हैं, वहां ठाकुर जी को हमेशा विराजते हैं।

श्री चरण का प्राकट्य:

सो अवसर बिरंचि जब जाना।
चले सकल सुर साजि बिमाना॥

गगन बिमल संकुल सुर जूथा।
गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा॥

रामायण में वर्णन है कि जब ब्रह्माजी ने भगवान राम के प्रकट होने का अवसर जाना तब (उनके समेत) सारे देवता विमान सजा-सजाकर चले। निर्मल आकाश देवताओं के समूहों से भर गया। गंधर्वों के दल गुणों का गान करने लगे।

इतिहास गवाह है जब जब श्री नारायण ने पृथ्वी पर अवतार लिया है तब तब देवी देवताओं ने स्वयं पृथ्वी पर आकर भगवान की स्तुति की है।

यही मोहक दर्शन उस दिन भी था जिस दिन सर्व शक्तिमान श्री राधारमण ने अपने परम स्नेही भक्तों की इच्छा पूर्ण करने के लिए श्री निकुंज धाम में अपना श्री चरण रखा।

भगवद् प्राप्ति दुर्लभ नहीं, दुर्लभ है भगवद् प्राप्त महापुरुषों का मिलना ।

भक्तो, हम सब सौभाग्य शाली हैं जिन्हें ऐसे महापुरुष के सानिध्य में भजन करने का मौक़ा मिला है।

यह सबसे अद्भुत दिलचस्प कहानी है कि कैसे भगवान अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमेशा इच्छुक रहते हैं।

गुरुदेव के मुख से:

यह शुभ बुधवार, अक्षय तृतीया, 2005 का दिन था। पांच संकीर्तनी वैष्णव महात्मा संन्यासी के भेष में निकुंज धाम आए।
का है रह्यौ है? के आकस्मिक प्रश्न से मैं विस्मृत हो गया क्योंकि मेरी बृज भाषा में कोई मुझसे प्रश्न कर रहा था।मैंने भी तत्परता से उत्तर देते हुए कहा- **ठाकुरजी कौ स्थान बन रह्यौ है। अच्छौ तौ नेक राधे राधे है जाय**? उनका तात्पर्य था कि थोड़ी देर संकीर्तन कर लें क्या? मैं तो प्रसन्नता से आत्म विभोर हो गया यह सोचकर ही कि घर बनने से पूर्व ही

उसे शुद्ध करने सन्त पधार गए। लगभग आधा घंटे संकीर्तन किए। सोचा कुछ दक्षिणा दे दूं किन्तु वयोवृद्ध सन्त ने इनकार करते हुए कहा- हम मंगटा पंडित नायँ। हमें धन नाय चाहिए। कछु देनौ चाहै तौ हमें एक कमंडल दै दै। मैं बाजार जाने में असमर्थ था क्योंकि कुछ पहचानता नहीं था। मेरी ऊहापोह की स्थिति देखकर बोले - अच्छा कोई बात नाय, बगैर देखे कछु भी डार दै झोली में। इतना बोलकर जैसे ही जाने लगे - एकाएक कुएं की खुदाई 22फीट नीचे से गीली मिट्टी निकलना प्रारंभ हो गया।और उस कीचड़ में एक श्याम रंग का शिलाखंड भी निकला जिसे मिट्टी के ढेर पर ही डाल दिया।

वयोवृद्ध सन्त ने मुझे धकेलते हुए कहा देख-ठाकुरजी पधारे हैं। मैंने जाकर देखा तो किसी **मनुष्य के वास्तविक पैर जैसी आकृति में ठाकुरजी का बांया चरण ही था**। बांया इसलिए कि अंगुष्ठ उत्तर दिशा में था। मैं तो रोमांचित हो गया देह आनंदातिरेक से कांपने लगा ,हृदय की धड़कनें तेज हो गईं और आत्ममुग्ध जैसी स्थिति में खो गया कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहा। इस किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में लगभग आधा मिनट बीत गया।मन में भावनाओं की तरंगें उठने लगी-सोचा क्यों न इन्हीं संतों के करकमलों से यहीं

स्थापना करवा दूँ। किन्तु अगले ही पल पांचों सन्त अदृश्य हो गए। मेरे पास एक बाइक थी और मजदूरों के पास साइकिल।हम सबने चारों ओर ढूंढा किन्तु कहीं नही मिले, जबकि वयोवृद्ध सन्त चलने में भी असमर्थ थे। तबसे लेकर आजतक ठाकुरजी के पावन श्रीचरण निकुञ्ज धाम में विराजित हैं जिनके सान्निध्य में भक्तलोग नाम उपचार के माध्यम से निरंतर आरोग्यता के साथ-साथ अपनी मनोकामनाएं सिद्ध कर रहे हैं।

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥

देवताओं के समूह विनती करके अपने-अपने लोक में जा पहुँचे।

समस्त लोकों को शांति देने वाले, जगदाधार प्रभु श्री चरण के रूप में प्रकट हुए।

दीनों पर दया करने वाले, गुरुदेव, गुरु माताजी एवं सभी भक्तों के हितकारी कृपालु प्रभु श्री चरण स्वरूप प्रकट हो गए।

सोचो कैसा दृश्य रहा होगा!

मन की आँखों से दर्शन करो तो निश्चय ही पुलकित शरीर में प्रेम की धारा प्रवाहित हुई होगी। आत्म मुग्ध स्थिति में आनंद मग्न होकर श्री चरण को हृदय में धारण किया होगा। नेत्रों से अश्रु इतने बरसे होंग़े के प्रभु का अभिषेक हो जाए। मन में शहनाइयाँ भी बजी होंगी, वाणी से पुष्प भी बरसे होंगे। मन का मोर नाचा भी होगा। ऐसे श्री नील माधव भगवान के मनोहर भाव विभोर प्राकट्य दृश्य को कोटि कोटि नमन।

परिशिष्ट भाव:

भगवान की कृपा निरंतर बरस रही है बस ज़रूरत है हमें एक योग्य पात्र बनने की जिसमें कृपा समा सके।

श्री चरण ठाकुर जी निकुंज धाम में ही क्यों पधारे:

भगवान नारायण का इस मनोहर श्री चरण के स्वरूप में प्राकट्य तय था शायद इसी लिए उन्होंने प्रेरणा देकर पूज्य दम्पति को वृंदावन के हरिद्वार भेजा था। शायद उसी दिन ठाकुर जी निकुंज धाम के पावन धरा के भू गर्भ में प्रवेश के गए थे। इस बात की झलक हमें गुरु महाराज की कुछ बाल्य काल स्वप्न संकेत से मिलती है।

यह भी एक दिव्य संयोग है कि पूज्य श्री बाल्यकाल से ही लगभग आठ 10 वर्ष की आयु से लेकर और इस भवन के बनने तक कम से कम 15 /20 बार स्वप्न में दर्शन कर चुके थे कि उनका घर किसी नदी के किनारे पर किसी जंगल में दोनों और यज्ञ कुंड के ठीक मध्य में बसा हुआ है जहां वह ठाकुर जी की सेवा करते हैं। इसलिए इस भूमि को ख़रीदने के समय भूमि को देखकर उनका यह स्वप्न सत्यवत प्रतीत होता लगा और अंततोगत्वा स्वप्न साकार भी हो गया। भवन का निर्माण ठीक वहीं दोनो कुंड के मध्य ही हुआ।

गुरुदेव और गुरुमाता की निरंतर इच्छा श्री राधा रमन लालजू के चरण कमलों की सेवा करने की है। वे श्री शाम सुंदर और

श्री राधिका के आकर्षक स्वरूप को आनंदमय प्रेम का प्रदर्शन करते हुए सदैव देखना चाहते हैं। वे हमेशा श्री राधारमण के चरण कमलों की सेवा के आनंद के लिए रोते थे। मंगला आरती का अति उत्तम विगत काल उनके मन में सदैव विद्यमान रहता था और उनके हृदय सदैव कृष्ण के चरण कमलों के दिव्य मुस्कान और दर्शन के स्मरण से अलंकृत रहते थे।

वे श्री राधा रमन जी से दिव्य प्रेमाश्रुओं से रोते रोते प्रार्थना करते थे। ठाकुर जी में उनकी दृढ़ निष्ठा और अटूट आस्था थी और उनका मानना था कि ठाकुर जी बहुत दयालु हैं और हमेशा अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं। वह रोज मंगला आरती की चाह में रोते थे। उनकी प्रबल इच्छा ने ठाकुर जी को उन्हें दैनिक मंगला आरती का आशीर्वाद देने के लिए, निकुंज धाम में उपस्थित होने के लिए मजबूर कर दिया।

श्री चरण का मंत्रमुग्ध स्वरूप:

श्री चरण की मधुर स्वरूप काले काले मेघों की नई वर्षा के समान है। केसर और कस्तूरी से लिपटे चंदन के सुगंधित तिलक से सुशोभित श्री चरण की सुंदरता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। श्याम पदाम्बुज पर कलियों और तुलसी पत्र की सुगंध मधुमक्खियों को भी अपने शहद के लिए आकर्षित करती है। चरण कमलों पर तुलसी पत्र, श्री चरण की अलंकृत उँगलियां और अंगुष्ठ नए चंद्रमा की तरह उत्कृष्ट हैं। श्री चरण के रूप में श्री कृष्ण का आनंदमय व्यक्तित्व पूर्णिमा से भी अधिक प्रकाशित है। श्री कृष्ण श्री चरण के रूप में परमानंद हैं।

मैं श्री चरण को नील माधव नाम से भी सम्बोधन करना चाहूँगी।स्वयं प्रकाश स्वयं सिद्ध भगवान नील माधव को मेरा कोटि कोटि वन्दन।

श्री चरण का स्वरूप अधोक्षज हैं, अपने केवल अपने चरण कमल के साक्षात्कार में परिपूर्ण हैं। भौतिक दृष्टि से भले ही हमें एक चरण दिखाई दे परंतु प्रेम भाव से हरी नाम जपते हुए मन की आँखों से अगर ध्यान करेंगे तो इसी श्री चरण के

ऊपर शंख चक्र पद्म और गद्दा धारण किए हुए नारायण भगवान का दर्शन होता है।

हम लड्डू गोपाल स्वरूप में बाल गोपाल को इसी तमाल वर्ण श्री चरण पर बैठे हुए मिश्री से सने मधुर माखन का स्वाद आनंद लेते हुए भी देख सकते हैं।

ब्रह्म पुराण में यमुना के आध्यात्मिक स्वरुप का स्पष्टीकरण करते हुए विवरण प्रस्तुत किया है - "जो सृष्टि का आधार है और जिसे लक्ष्णों से सच्चिदनंद स्वरुप कहा जाता है, उपनिषदों ने जिसका ब्रह्म रुप से गायन किया है, वही परमतत्व साक्षात् यमुना है। गौड़िय विद्वान श्री रुप गोस्वामी ने यमुना को साक्षात् चिदानंदमयी बतलाया है। यह श्री चरण उसी बल खाती हुई चिन्मय यमुना की छवि भी है जिसमें श्री राधा माधव नौका विहार कर रहे हैं।

यह वही मेघ वर्ण की कदम्ब की डाली भी है जिसपर प्रियाजी लालजु संग झूला झूल रही हैं।

ऐसे आश्चर्यमय रूप को बार बार प्रणाम है।

यह अत्य्यंत सुंदर नित्य नया स्वरूप अपनी अंग कांति से स्वयं जगमगाता है।समग्र कीर्ति के आश्रय श्री चरण को मेरा नमन है।

श्री चरण स्वरूप में नील माधव चाँदी के सिंघासन पर विराजमान हैं , जैसे शेष भगवान की सुखमय शय्या पर सर्वव्यापक महान पुरशोत्तम भगवान विराजमान हैं।
यह आनंद का स्वरूप केवल महसूस ही किया जा सकता है।

इस सर्वऐश्वर्य परब्रह्म स्वरूप को मेरा बार बार प्रणाम है।

जो ब्रह्म ज्योति स्वरूप समस्त गुण से रहित और विकार रहित हैं, जिन्हें अनिर्वरचनिय निष्क्रिय एवं विशुद्ध सत्ता कहा गया है उन सर्वशक्तिमान भगवान को मेरा प्रणाम है।

हम भगवान माधुर्यनिधि के श्रीचरण स्वरूप की माला के ताजे फूलों से अमृत के लिए हमेशां हमेशां उत्सुक रहें।

हमारा मन विचलित हुए बिना सदा श्री कृष्ण के चरण कमलों की शरण में रहे।

भगवान माधुर्यनिधि को कोटि कोटि नमन।

भक्तो वृंदावन के ठाकुर मंदिरों में विराजमान हैं। हमारे ठाकुर श्री चरण के स्वरूप में गुरुद्वारे में विराजते हैं। निकुंज धाम गुरुद्वारा है हमें इसकी महिमा को समझना होगा। गुरुद्वारा जहां कृपा सिंधु नर रूप हरी एवं हरी दोनों का दर्शन एक साथ मिलता है । हम बहुत सौभाग्यशाली हैं के श्री चरण के दर्शन एवं कृपा हमारे लिए सुलभ है।

निकुंज धाम का कण-कण रसमय है। श्री चरण के तेज से उज्ज्वल है। यहाँ प्रेम-भक्ति का ही साम्राज्य है। यहाँ नित्य प्रति रासलीलाओं, साधु-संगतों, हरिनाम संकीर्तन, भागवत आदि ग्रन्थों के पाठ से श्री राधारमण मधुर सेवा से सदैव प्रसन्न रहते हैं।

परिशिष्ट भाव:

एक और पक्ष रखती हूँ। वनवास पूरण होने पर अयोध्या वापिस लौटते समय श्री राम पुनः केवट से मिले थे। केवट ने फिर से चरण धोने का आग्रह किया था।तब श्री राम ने कहा था केवट मैं तो एक बार चरण धोने और गंगा पार कराने की उतराई नहीं दे पाया हूँ। मानो तो गुरुदेव वही केवट हैं और वही गंगा का किनारा है जिनसे चरण परखलन करवाने पर श्री राम को अपार स्नेह और आनंद मिला था।शायद उसी प्रेम और आनंद को नित्य महसूस करने के लिए एवं अपनी सेवा भक्ति रूपी उतराई देने के लिए , केवट को सदा सुखी करने के लिए पुनः श्री राम को श्री चरण स्वरूप में ही आना पड़ा ।

जो योगियों के लिए भी दुर्लभ है, उन भगवान करुणा यत्न ने श्री चरण के रूप में पूज्य श्री को विमल भक्ति वरदान दे दिया।
जिनके परम मंगलमय स्वरूप का दर्शन के लिए महात्मा गण संसार की सारी आसक्तियाँ त्याग देते हैं वही परमानंद स्वयं आनंद लेने के लिए भक्त की गोद में आ गए।

माता शबरी को तो करुणा निधान श्री राम ने अपना परम धाम दे दिया लेकिन अयोध्या लौटने के बाद भी माँ शबरी के बेरों के रस के आगे ५६ भोग फीके लगते थे।

भक्तो मैंने देखा है गुरुमाता जी को फूंक फूंक के भोजन पवाते हुए, इसीलिए वही रस का पुनः आस्वादन करने के लिए श्री राम फिर से आए हैं ।

श्री चरण का स्वरूप मेघ के समान नेत्रों को आनंद देने वाला है ।श्रुतियाँ और संत जन दया और सुख का समुद्र, सब गुणों का धाम कहकर जिनका गान करते हैं वही भक्तों पर कृपा करने वाले श्री राधारमण श्री चरण के स्वरूप में हमारे कल्याण के लिए ही प्रकट हुए हैं।

भगवान की महिमा अनंत है जिसे शब्दों में लिखना असम्भव है।मेरी प्रार्थना है कि मेरे तुच्छ भाव को श्री राधारमण स्वीकार करें ।

ईश्वर के चरण ही जिनका मुख्य आश्रय है, हमें उनके चरणों की सेवा का मौक़ा मिले। मन से सदा श्री राधारमण के

गुणों का स्मरण करें , वाणी प्रभु के नाम-गुण का कीर्तन करें और शरीर सदा हरि के सेवा में लगा रहे।

दया और सुख के समुद्र, सब गुणों के धाम श्री राधारमण को कोटि कोटि प्रणाम करती हूँ।

श्याम चरण रंग नीला है या काला,
बोलो कैसा है नन्दलाला।

ना नीला है ना काला मेघ वर्ण
नारायण है यह मुरली वाला

केवट को नित सेवा सुख देने को
गंगा तट पर फिर से आ गए राम कृपाला

ना नीला है ना काला है मेघ वर्ण
नारायण है यह मुरली वाला

केवट के हैं ऋणी हरी
वह था प्रेम मतवाला

वही प्रेम निभाने की ख़ातिर गंगा तट पर
फिर से आ गए ब्रज के लाला

माँ शबरी के एक एक बेर
था इतना रसवाला

नित नित अमृत पाने
फिर से आया श्याम निराला

प्रेम भरे हाथों से फूंक फूंक के भोजन पाने
प्रकट् हरि, मेघ घटा घन काला।

श्याम चरण रंग नीला है या काला,
बोलो कैसा है नन्दलाला

जो कुछ गुरुदेव के मुखारविंद से श्रवण किया उस को अपनी सीमित बुद्धि से टूटी फूटी वाणी में लिखने का प्रयास किया है।
मुझे उचित शब्दों एवं सही भाषा का बिलकुल भी ज्ञान नहीं है।
मेरी अर्ज़ी है के मेरी सारी ग़लतियों को मुझे ज़रूर बताएँ बिलकुल भी नज़रअन्दाज़ ना करे ताकि मैं अपनी सारी ग़लतियों को सुधार सकूँ।
मैं श्री राधे कृष्ण, गुरुदेव, गुरुमाता एवं सभी वैष्णव भक्तों के चरणों में बार बार प्रणाम करती हूँ।

परिणीता